



अग्निप्राइम मिसाइल

प्रलम्बिस के लिये:

अग्नि-पी मिसाइल, ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल (वायु संस्करण), वर्टिकल लॉन्च शॉर्ट रेंज सरफेस टू एयर मिसाइल (वीएल-एसआरएसएम), नाग, आकाश, रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ), आईजीएमडीपी।

मेन्स के लिये:

अन्य देशों की तुलना में भारत की मिसाइल प्रौद्योगिकी और संबंधित उदाहरण, भारत में मिसाइल प्रौद्योगिकी का विकास।

चर्चा में क्यों?

हाल ही में [रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन](#) (DRDO) ने नई पीढ़ी की परमाणु सक्षम बैलस्टिक मिसाइल 'अग्नि प्राइम' का सफलतापूर्वक परीक्षण किया।

- यह मिसाइल का दूसरा परीक्षण है, पहला परीक्षण जून 2021 में हुआ था।
- अग्नि-पी मिसाइल का लक्ष्य भारत की विश्वसनीय प्रतिरक्षा क्षमता को और मजबूत करना है।

प्रमुख बंदि

परचिय:

- अग्नि-पी एक दो चरणों वाली कनसुतरीकृत ठोस प्रणोदक मिसाइल है जिसमें दोहरी नेवगिशन और मार्गदर्शन प्रणाली है।
- इसे अत्यधिक कौशल और सटीकता सहित बेहतर मापदंडों के साथ अग्नि-श्रेणी की मिसाइलों की एक नई पीढ़ी का उन्नत संस्करण कहा गया है।
 - मिसाइलों के कनसुतरीकरण से मिसाइल को लॉन्च करने के लिये आवश्यक समय कम हो जाता है, जबकि भंडारण और संचालन में आसानी होती है।
- सतह-से-सतह पर मार करने वाली इस बैलस्टिक मिसाइल की मारक क्षमता 1,000 से 2,000 किलोमी. है।

मिसाइलों की अग्नि-श्रेणी:

- अग्नि-श्रेणी की मिसाइलें भारत की परमाणु प्रक्षेपण क्षमता का मुख्य आधार हैं, इनमें **पृथ्वी**- कम दूरी की बैलस्टिक मिसाइल, पनडुब्बी से लॉन्च की गई बैलस्टिक मिसाइल और लड़ाकू विमान भी शामिल हैं।
 - 5,000 किलोमी. से अधिक रेंज वाली एक अंतर-महाद्वीपीय बैलस्टिक मिसाइल (ICBM) अग्नि-V का कई बार परीक्षण किया गया था और इसे शामिल करने के लिये मान्य किया गया था।
- अग्नि-पी और अग्नि-5 बैलस्टिक मिसाइलों की उत्पत्ति [एकीकृत नरिदेशति मिसाइल विकास कार्यक्रम \(IGMDP\)](#) से हुई है, जिसका नेतृत्व डीआरडीओ के पूर्व प्रमुख और पूर्व भारतीय राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने 1980 के दशक की शुरुआत में किया था।

अग्नि-मिसाइलों की अन्य रेंज:

- अग्नि-I: 700-800 किलोमी. की सीमा।
- अग्नि-II: रेंज 2000 किलोमी. से अधिक।
- अग्नि-III: 2,500 किलोमी. से अधिक की सीमा
- अग्नि-IV: इसकी रेंज 3,500 किलोमी. से अधिक है और यह एक रोड मोबाइल लॉन्चर से फायर कर सकती है।
- अग्नि-V: अग्नि-शंखला की सबसे लंबी, एक अंतर-महाद्वीपीय बैलस्टिक मिसाइल (ICBM) है जिसकी रेंज 5,000 किलोमी. से अधिक है।

हाल ही में परीक्षण की गई मिसाइल:

- [ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल \(वायु संस्करण\)](#)
- [वर्टिकल लॉन्च शॉर्ट रेंज सरफेस टू एयर मिसाइल \(VL-SRSAM\)](#)

एकीकृत नरिदेशति मसिाइल वकिस कार्क्यकरम (IGMDP):

- इसकी स्थापना का वचिार प्रसदिध वैज्जानकि डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम द्वारा दया गया था । इसका उद्देश्य मसिाइल प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आत्मनरिभरता प्राप्त करना था । इसे भारत सरकार द्वारा वर्ष 1983 में अनुमोदति कया गया था और मार्च 2012 में पूरा कया गया था ।
- इस कार्क्यकरम के तहत वकिसति 5 मसिाइलें (P-A-T-N-A) हैं:
 - **पृथ्वी:** सतह-से-सतह पर मार करने में सक्षम कम दूरी वाली बैलसिटिकि मसिाइल ।
 - **अगर्न:** सतह-से-सतह पर मार करने में सक्षम मध्यम दूरी वाली बैलसिटिकि मसिाइल, यानी अगर्न(1,2,3,4,5) ।
 - **तरशूल:** सतह से आकाश में मार करने में सक्षम कम दूरी वाली मसिाइल ।
 - **नाग:** तीसरी पीढ़ी की टैंक भेदी मसिाइल ।
 - **आकाश:** सतह से आकाश में मार करने में सक्षम मध्यम दूरी वाली मसिाइल ।

भारत में मसिाइल प्रौद्योगिकी का इतहास:

- मसिाइल प्रौद्योगिकी के बारे में:
 - आज़ादी से पहले भारत में कई राज्य अपनी युद्ध तकनीकों के हसिसे के रूप में रॉकेट (Rockets) का उपयोग कर रहे थे ।
 - मैसूर के शासक हैदर अली ने 18वीं शताब्दी के मध्य में अपनी सेना में लोहे के आवरण वाले रॉकेटों को शामिल करना शुरू कया ।
 - आज़ादी के समय भारत के पास कोई स्वदेशी मसिाइल क्षमता नहीं थी ।
 - वर्ष 1958 में सरकार द्वारा स्पेशल वेपन डेवलपमेंट टीम (Special Weapon Development Team) गठति की गई ।
 - बाद में इसका वसितार कर इसे रक्षा अनुसंधान और वकिस प्रयोगशाला (DRDL) कहा जाने लगा जैसे वर्ष 1962 में दलिली से हैदराबाद हस्तांतरति कर दया गया ।
 - वर्ष 1972 में मध्यम दूरी की सतह-से-सतह पर मार करने वाली मसिाइल के वकिस के लयि प्रोजेक्ट डेवलि (Project Devil) शुरू कया गया था ।
 - वर्ष 1982 तक DRDL द्वारा एकीकृत नरिदेशति मसिाइल वकिस कार्क्यकरम (Integrated Guided Missiles Development Programme- IGMDP) के तहत कई मसिाइल प्रौद्योगिकियों पर कार्क्य कया गया ।
- भारत के पास उपलब्ध मसिाइलों के प्रकार:
 - सरफेस-लॉन्च ससिटम:
 - **एंटी-टैंक गाइडेड मसिाइल:**
 - **नाग**
 - **सतह से हवा में मार करने वाली मसिाइल:**
 - **आकाश**
 - **मीडियम-रेंज सैम:**
 - नौसेना के लयि MRSAM ससिटम का उत्पादन पूरा हो गया है और नौसेना द्वारा इसका ऑर्डर दया जा रहा है ।
 - **शॉर्ट-रेंज सैम:**
 - नौसेना के लयि इसका पहला परीक्षण सफलतापूर्वक कया गया है ।
 - **सेवरल एयर-लॉन्च ससिटम:**
 - **हवा-से-हवा:**
 - **असत्र**
 - **हवा से ज़मीन:**
 - **उदरम**
 - **बरहमोस**
- भारत की सबसे महत्त्वपूर्ण मसिाइलें:
 - **अगर्न (लगभग 5,000 कमी. रेंज):**
 - यह भारत की एकमात्र अंतर-महाद्वीपीय बैलसिटिकि मसिाइल (Inter-Continental Ballistic Missile- ICBM) है, जो केवल कुछ देशों के पास उपलब्ध है ।
 - **पृथ्वी:**
 - यह 350 कमी. की रेंज वाली सतह-से-सतह पर मार करने वाली कम दूरी की मसिाइल है और इसके सामरिकि उपयोग हैं ।
 - अप्रैल 2019 में भारत द्वारा एक एंटी-सैटेलाइट ससिटम का भी परीक्षण कया गया ।
 - पृथ्वी डफेंस व्हीकल MK 2 नामक एक संशोधति एंटी-बैलसिटिकि मसिाइल का उपयोग कम ऊँचाई की कक्षा के उपग्रह को हटि करने लयि कया गया ।
 - अमेरिका, रूस और चीन के बाद भारत इस क्षमता को प्राप्त करने वाला देश है ।
- हाइपरसोनिक प्रौद्योगिकी:
 - इस तकनीक के मामले में संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस और चीन के बाद भारत दुनिया का चौथा देश है ।
 - 'रक्षा अनुसंधान एवं वकिस संगठन' ने सतिंबर 2020 में एक 'हाइपरसोनिक टेक्नोलॉजी डमिॉन्सट्रेटर व्हीकल' (HSTDV) का सफलतापूर्वक परीक्षण कया था और अपनी हाइपरसोनिक एयर-ब्रीदगि स्क्वैमजेट तकनीक का प्रदर्शन कया था ।
- पाकसितान और चीन की तुलना में भारत की मसिाइल तकनीक:

◦ भारत

- 'इंटीग्रेटेड गाइडेड मिसाइल डेवलपमेंट प्रोग्राम' (IGMP) के तहत पहले 'पृथ्वी' और फिर 'अग्नि' मिसाइल को विकसित किया गया।
- 'ब्रह्मोस' (ध्वनि की गति से 2.5-3 गुना तेज़) के विकसित होने पर यह दुनिया के सबसे तेज़ मिसाइलों में से एक था।
- भारत अग्नि VI और अग्नि VII पर काम कर रहा है, जिनकी रेंज काफी अधिक होगी।

◦ चीन और पाकिस्तान

- यद्यपि चीन भारत से आगे है, कति कई विशेषज्ञ मानते हैं कि चीन के वषिय में बहुत से तथ्य केवल मनोवैज्ञानिक हैं।'
- चीन ने पाकिस्तान को तकनीक दी है, "लेकिन तकनीक प्राप्त करना और वास्तव में उसका उपयोग करना तथा उसके बाद एक नीति विकसित करना पूरुणतः अलग-अलग हैं।
- भारत की परमाणु मिसाइलें- 'पृथ्वी' और 'अग्नि' हैं, लेकिन उनसे परे सामरिक परमाणु हथियारों को भारतीय वायु सेना के कुछ लड़ाकू जेट विमानों से या सेना की बंदूकों से दागा जा सकता है, जिनकी सीमा कम होती है, लगभग 50 किलोमीटर है।

स्रोत: द हद्दू

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/agni-p-missile>

